SUMMARY

भारतीय संगीत का ईतिहास पुरातनकाल से चला आ रहा हैं । ईन संगीत में उत्तर भारतीय संगीत पर दृष्टिपात करे तो यह संगीत, जनमान्य माना गया है । अर्थात् ईन संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य ऐसी, तीनो विधाओं का समावेश हुआ हैं । अर्थात् शोधार्थी का विषय यह वादन से जुड़ा हुआ है । यदि वादन पर दृष्टिपात करे तो, शोधार्थी ने चर्मवाद्यो में से तबला यह विषय पसंद करके ईन वाद्य पर बजनेवाली विभिन्न रचनाएँ तथा घरानो पर विचार विमर्श करके दिल्ली एवं फरुखाबाद घराने पर अत्यंत कष्टसाध्य ऐसा शोध कार्य करने का प्रयास किया हैं । जिस प्रकार अन्य विधाओं में अलग–अलग घराने होते हैं । ठीक उसी प्रकार तबले में भी विभिन्न घराने होते है । यदि, तबले के घरानो पर दृष्टिपात करे तो, दिल्ली यह पितामुल्य घराना माना गया है । अर्थात् ईससे पूर्व किसी घराने का जन्म नहीं हुआ था । शोधार्थी ने अपना शोध ग्रंथ लिखने से पूर्व कई वर्षो तक तबले पर विभिन्न गुरुओं के द्वारा प्राप्त हुई ऐसी तालीम पर विचार विमर्श किया । फलतः तथ्य यह सामने आया कि केवल दिल्ली या केवल फरुखाबाद घरानो पर कार्य हुआ हैं । किन्तु, घराना स्वयं यह बतलाता है कि, किसी विशिष्ट वादन प्रणाली की अर्थात् क्रमशः वादन पद्धति को अपनाया जाय । ईसी कारणवश दिल्ली एवं फरुखाबाद घराने की क्रमशः वादन प्रणाली पर तुलनात्मक अध्ययन करके क्युं न शोध प्रबंध लिखा जाय, जिससे वर्तमानकाल में एवं भविष्यकाल में, ईन दोनो घरानो पर यदि किसी को अभ्यास करना हो तो यह शोध प्रबंध उन्हे अपना आगे का कार्य उजागर करने के लिए, फलस्वरूप बने ।

दिल्ली वस्तुतः तबले का पिता माना गया हैं । अर्थात् इस शोध प्रबंध में विभिन्न लेखको द्वारा लिखी गई पुस्तको को पाद टिप्पण के रूप में लिया गया हैं । किन्तु शोधार्थी का अपना कथन एवं अपने विचारों को भी देने का प्रयास किया हैं । दिल्ली घराने के पश्चात पुत्र के रुप में अजराडा घराने का नाम लिया जाता हैं । अपितु, इस

घराने पर कार्य हो चुका था । इसी कारण फरुखाबाद घराने को चुना गया । दोनो घरानों की शुरुआत पर दृष्टिपात करे तो, करीबन १०० साल का फर्क दिखाई देता है । अर्थात् दिल्ली घराने की शुरुआत जनमान्य की दृष्टि से ई.स. १७१० से लेकर ई.स.१७३० तक मानी गई हैं । एवं फरुखाबाद घराने की शुरुआत १८वी शताब्दी में मानी गई है । दोनों घरानो की नींव अलग–अलग उस्तादों के द्वारा की गई हैं । जिसकी पुष्टि इसी शोध ग्रंथ के अंत में दोनों घरानो की परिशिष्ट के द्वारा उजागर करने का प्रयास किया हैं ।

दोनों घरानो पर विचार करे तो यह दोनों घराने स्वतंत्र तबलावादन के लिए, उपयुक्त माने गये हैं । जिसे, आज भी वर्तमानकाल में दोनों घरानो को जीवीत रखने में कई कलाकार अपना योगदान दे चुके हैं, एवं दे रहे हैं । शोधार्थी का विषय दिल्ली एवं फरुखाबाद घराने की विधिवत तबलावादन परंपरा एवं तुलनात्मक अध्ययन यह हैं । इस पर अत्यंत कष्टसाध्य गहन अध्ययन करके जो तथ्य सामने दिखाई दिये उन्ही पर दृष्टिपात करने का प्रयास किया हैं । अतः दोनों घरानो की विधिवत तबलावादन परंपरा एवं तुलनात्मक अध्ययन पर शोध ग्रंथ लिखने का प्रयास किया गया हैं । शास्त्रोक्त तबलावादन करना यह एक कठिन काम हैं, क्यों कि, जो पूर्वजोने इन दोनों घरानो को संभालने में अतः अभी तक कायम रखने में जो महत्वपूर्ण कार्य किया है उसे भुला तो जा नहीं सकता बल्कि उसमें परिवर्तन करना ही असंभव हैं । निश्चित रूप से दोनों घराने स्वतंत्र तबलावादन करने में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं ।

विभिन्न लेखको के मतानुसार, एवं वर्तमानकाल में जिवीत इन दोनो घरानो के मूर्घन्य कलाकारों का साक्षात्कार करके जो निष्कर्ष सामने दिखाई दिया उन्हें ही इस शोध प्रबंध में उजागर करने का प्रयास किया गया है ।